SARVAGYA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7153(E)
Vol. 1, Issue 2, July-September 2024
Available online : https://sarvagyajournal.com/

आजाद हिंद फौज और भारत की आजादी में उनका मनोवैज्ञानिक प्रभाव

ज्योति कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग
बी0आर0 अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
jyotimuz80@gmail.com

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास सामान्यतः अहिंसात्मक आंदोलनों, संवैधानिक सुधारों तथा जन-आधारित राजनीतिक संघर्षों के संदर्भ में लिखा जाता है, किंतु सशस्त्र राष्ट्रवादी आंदोलनों की भूमिका, विशेषकर आजाद हिंद फौज (INA) के मनोवैज्ञानिक प्रभाव, को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि आजाद हिंद फौज ने केवल सैन्य स्तर पर ही नहीं, बल्कि भारतीय जनमानस, ब्रिटिश भारतीय सेना तथा औपनिवेशिक सत्ता की मानसिक संरचना पर किस प्रकार गहरा प्रभाव डाला। शोध-पत्र ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा इसमें द्वितीय विश्वयुद्ध, सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व, INA ट्रायल, नौसेना विद्रोह तथा ब्रिटिश साम्राज्य की प्रशासनिक प्रतिक्रियाओं का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन यह दर्शाता है कि INA की वास्तविक शक्ति उसकी सैन्य सफलता में नहीं, बल्कि औपनिवेशिक मानसिकता को चुनौती देने की क्षमता में निहित थी। इसने भारतीयों में आत्मविश्वास, राष्ट्रवाद और राजनीतिक साहस की भावना विकसित की तथा ब्रिटिश शासन की वैधता को मानसिक स्तर पर कमजोर किया। शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भारत की स्वतंत्रता केवल राजनीतिक वार्ताओं का परिणाम नहीं थी, बल्कि औपनिवेशिक सत्ता की मनोवैज्ञानिक पराजय भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी, जिसमें आजाद हिंद फौज की भूमिका निर्णायक सिद्ध हुई।

मुख्य शब्द: आजाद हिंद फौज, सुभाष चंद्र बोस, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, औपनिवेशिक मानसिकता, राष्ट्रवाद

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अनेक वैचारिक धाराएँ समानांतर रूप से सक्रिय रहीं। एक ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक जनांदोलन थे, तो दूसरी ओर क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और सशस्त्र प्रतिरोध की परंपरा भी विकसित हो रही थी। इतिहास लेखन में अक्सर अहिंसात्मक आंदोलनों को केंद्रीय स्थान दिया गया, जबकि सशस्त्र राष्ट्रवादी प्रयासों को सीमित महत्व प्रदान किया गया। इसी परिप्रेक्ष्य में आज़ाद हिंद फौज का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। यह केवल एक सैन्य संगठन नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध मानसिक, वैचारिक और भावनात्मक प्रतिरोध का प्रतीक बन गया था।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद केवल सैन्य शक्ति या प्रशासनिक नियंत्रण पर आधारित नहीं था; वह मनोवैज्ञानिक प्रभुत्व की भी एक संरचना था। औपनिवेशिक शासन ने भारतीयों के भीतर यह धारणा स्थापित करने का प्रयास किया कि वे राजनीतिक रूप से अयोग्य, सैन्य दृष्टि से कमजोर और प्रशासनिक रूप से निर्भर हैं। अंग्रेजों की "सभ्यता मिशन" की अवधारणा भारतीयों में हीनता-बोध उत्पन्न करने का माध्यम थी (Chandra, 1989)। इसी मानसिक संरचना को चुनौती देने का कार्य आजाद हिंद फौज ने किया।

सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक नए आयाम में प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक अधिकार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सम्मान और आत्मगौरव का प्रश्न माना। बोस का मानना था कि औपनिवेशिक सत्ता केवल नैतिक अपील से समाप्त नहीं होगी; उसके लिए संगठित सैन्य और मनोवैज्ञानिक चुनौती आवश्यक है। उनके नेतृत्व में INA भारतीय जनता के लिए प्रतिरोध और आत्मसम्मान का प्रतीक बन गई (Gordon, 1990)।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि आजाद हिंद फौज ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में किस प्रकार मनोवैज्ञानिक परिवर्तन उत्पन्न किए। अध्ययन विशेष रूप से भारतीय जनमानस, ब्रिटिश भारतीय सेना तथा ब्रिटिश प्रशासन पर पड़े प्रभावों की समीक्षा करता है। यह शोध इस तर्क को प्रस्तुत करता है कि INA की ऐतिहासिक भूमिका उसकी सैन्य उपलब्धियों से अधिक उसकी मानसिक और प्रतीकात्मक शक्ति में निहित थी।

आजाद हिंद फौज का गठन और वैचारिक आधार

द्वितीय विश्वयुद्ध ने विश्व राजनीति और औपनिवेशिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया। जापान की सैन्य सफलताओं के बाद दक्षिण-पूर्व एशिया में बड़ी संख्या में भारतीय सैनिक युद्धबंदी बने। इन्हीं परिस्थितियों में रासबिहारी बोस के प्रयासों से आजाद हिंद फौज की स्थापना हुई। बाद में सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व ग्रहण करने के बाद संगठन ने नई ऊर्जा प्राप्त की।

बोस ने INA को केवल सैन्य संगठन के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे एक राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन के रूप में विकसित किया। "जय हिंद," "दिल्ली चलो," और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" जैसे नारों ने भारतीयों में भावनात्मक ऊर्जा उत्पन्न की। यह भाषिक राष्ट्रवाद मनोवैज्ञानिक रूप से अत्यंत प्रभावी था क्योंकि इसने जनता को निष्क्रिय प्रजा से सक्रिय राष्ट्रवादी नागरिक में रूपांतरित करने का प्रयास किया।

बोस का राष्ट्रवाद सांप्रदायिक सीमाओं से ऊपर था। INA में हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सैनिकों की समान भागीदारी ने राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। उस समय जब भारत सांप्रदायिक तनावों से गुजर रहा था, INA ने एक समावेशी राष्ट्रवाद का उदाहरण प्रस्तुत किया। यह ब्रिटिश "divide and rule" नीति के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण वैचारिक चुनौती थी (Sarkar, 2014)।

भारतीय जनमानस पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव

आज़ाद हिंद फौज का सबसे गहरा प्रभाव भारतीय जनता की मानसिकता पर पड़ा। औपनिवेशिक शासन ने लंबे समय तक भारतीयों में भय और अधीनता की भावना स्थापित कर रखी थी। अंग्रेजों की सैन्य शक्ति को अजेय माना जाता था। INA ने पहली बार इस मिथक को तोड़ा कि ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती नहीं दी जा सकती।

जब भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश सेना के विरुद्ध हथियार उठाए, तो जनता के भीतर आत्मविश्वास और राजनीतिक साहस का विकास हुआ। यह केवल सैन्य कार्रवाई नहीं थी; यह औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध विद्रोह था। बोस के व्यक्तित्व और भाषणों ने युवाओं में विशेष उत्साह उत्पन्न किया। उन्होंने स्वतंत्रता को त्याग, अनुशासन और बलिदान से जोड़ा। इससे राष्ट्रवाद एक भावनात्मक अनुभव बन गया।

INA ट्रायल का प्रभाव इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण था। 1945–46 में लाल किले में चलाए गए मुकदमों ने पूरे देश में व्यापक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। शाह नवाज खान, प्रेम कुमार सहगल और गुरबख्श सिंह ढिल्लों को अंग्रेज सरकार ने देशद्रोही सिद्ध करने का प्रयास किया, किंतु जनता ने उन्हें राष्ट्रनायक के रूप में देखा। छात्रों, मजदूरों, वकीलों और राजनीतिक दलों ने इन मुकदमों का विरोध किया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश शासन अपनी नैतिक वैधता खो चुका था (Majumdar, 1966)।

यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि INA ने राष्ट्रवाद को केवल अभिजात राजनीतिक विमर्श तक सीमित नहीं रखा। इसकी अपील समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँची। ग्रामीण जनता, मध्यम वर्ग, छात्र समुदाय और सैनिक—सभी ने इसे राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में देखा। इस प्रकार INA ने राष्ट्रवाद का जनतंत्रीकरण किया।

ब्रिटिश भारतीय सेना पर प्रभाव

ब्रिटिश शासन की स्थिरता का सबसे बड़ा आधार भारतीय सेना थी। अंग्रेजों की संख्या सीमित थी; इसलिए भारत पर शासन बनाए रखने के लिए उन्हें भारतीय सैनिकों की निष्ठा आवश्यक थी। 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने सेना का पुनर्गठन किया था ताकि राष्ट्रवादी भावनाएँ सेना में प्रवेश न कर सकें।

INA ने इस संरचना को गहराई से चुनौती दी। ब्रिटिश भारतीय सेना के अनेक सैनिकों ने INA में शामिल होकर यह प्रदर्शित किया कि उनकी निष्ठा साम्राज्य से अधिक राष्ट्र के प्रति हो सकती है। यह ब्रिटिश शासन के लिए अत्यंत चिंताजनक था।

1946 का रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह इसी मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का परिणाम माना जाता है। नौसेना के हजारों सैनिकों ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया और "जय हिंद" तथा "INA ज़िंदाबाद" जैसे नारे लगाए। यह केवल वेतन या भोजन संबंधी असंतोष नहीं था; इसके पीछे राष्ट्रवादी चेतना भी सक्रिय थी।

इतिहासकारों का मानना है कि इस घटना ने ब्रिटिश प्रशासन को यह एहसास करा दिया कि भारतीय सशस्त्र बलों पर अब पूर्ण विश्वास नहीं किया जा सकता। यदि सेना की निष्ठा समाप्त हो जाए, तो साम्राज्य टिक नहीं सकता। ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली ने भी बाद में स्वीकार किया कि INA और सैन्य असंतोष ने ब्रिटिश निर्णयों को प्रभावित किया (Brown, 1994)।

इस प्रकार INA का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उसने औपनिवेशिक सत्ता के सुरक्षा तंत्र को मानसिक स्तर पर कमजोर कर दिया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का मनोवैज्ञानिक नेतृत्व

सुभाष चंद्र बोस का नेतृत्व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अद्वितीय था। वे केवल राजनीतिक नेता नहीं थे; वे एक प्रभावशाली मनोवैज्ञानिक प्रेरक भी थे। उन्होंने भारतीयों में आत्मविश्वास और राष्ट्रीय सम्मान की भावना को पुनर्जीवित किया।

बोस की राजनीतिक शैली गांधी से भिन्न थी। गांधी नैतिक प्रतिरोध और जन-संघर्ष पर बल देते थे, जबकि बोस सशस्त्र संघर्ष और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को आवश्यक मानते थे। यद्यपि दोनों की रणनीतियाँ अलग थीं, दोनों का अंतिम उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता था।

बोस की सबसे बड़ी विशेषता उनकी प्रतीकात्मक राजनीति थी। उन्होंने राष्ट्रवाद को भावनात्मक ऊर्जा से जोड़ा। उनकी वेशभूषा, सैन्य अनुशासन, भाषण शैली और संगठनात्मक क्षमता ने जनता को प्रभावित किया। वे भारतीयों को केवल स्वतंत्रता का सपना नहीं दिखा रहे थे, बल्कि उन्हें यह विश्वास दिला रहे थे कि स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।

उनका "जय हिंद" का नारा आज भी राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का प्रतीक है। इससे स्पष्ट होता है कि उनका प्रभाव केवल तत्कालीन राजनीति तक सीमित नहीं था, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय चेतना में स्थायी रूप से समाहित हो गया।

INA की सीमाएँ और आलोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि INA का मनोवैज्ञानिक प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण था, किंतु इसकी सीमाओं को भी स्वीकार करना आवश्यक है। सैन्य दृष्टि से INA जापान पर अत्यधिक निर्भर थी। संसाधनों, हथियारों और रणनीतिक स्वायत्तता की कमी इसके लिए बड़ी चुनौती थी। इम्फाल और कोहिमा की पराजय ने इसके सैन्य अभियान को कमजोर कर दिया।

इसके अतिरिक्त, बोस की धुरी राष्ट्रों (Axis Powers) से निकटता को लेकर भी आलोचना हुई है। कुछ इतिहासकारों का तर्क है कि फासीवादी शक्तियों से सहयोग नैतिक दृष्टि से विवादास्पद था (Haynes, 2011)। हालांकि अन्य विद्वानों का मानना है कि बोस की रणनीति व्यावहारिक थी और उनका उद्देश्य केवल भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करना था।

एक अन्य आलोचना यह है कि INA की लोकप्रियता को कभी-कभी राष्ट्रवादी इतिहासलेखन में अत्यधिक रोमांटिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः इसकी सैन्य क्षमता सीमित थी और यह व्यापक जनविद्रोह उत्पन्न करने में सक्षम नहीं थी। फिर भी, इसकी ऐतिहासिक भूमिका को केवल सैन्य परिणामों से नहीं आँका जा सकता। इसका वास्तविक महत्व औपनिवेशिक मानसिकता को चुनौती देने में था।

स्वतंत्रता आंदोलन में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन की भूमिका

स्वतंत्रता आंदोलनों में मनोवैज्ञानिक तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। किसी भी औपनिवेशिक शासन की स्थिरता केवल सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं करती; वह जनता की मानसिक स्वीकृति पर भी आधारित होती है। जब जनता और सैनिक शासन की वैधता को स्वीकार करना बंद कर देते हैं, तब साम्राज्य कमजोर होने लगता है।

INA ने इसी प्रक्रिया को तीव्र किया। इसने भारतीयों में यह विश्वास उत्पन्न किया कि स्वतंत्रता संभव है और अंग्रेज अजेय नहीं हैं। इसने राष्ट्रवाद को भावनात्मक और सैन्य दोनों रूपों में पुनर्परिभाषित किया।

ब्रिटिश प्रशासन के लिए सबसे बड़ा संकट यह था कि INA ने भय की राजनीति को कमजोर कर दिया। यदि जनता और सैनिक दोनों भयमुक्त हो जाएँ, तो औपनिवेशिक शासन टिक नहीं सकता। यही कारण है कि INA का प्रभाव उसकी सैन्य उपलब्धियों से कहीं अधिक व्यापक था।

निष्कर्ष

आज़ाद हिंद फौज भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐसा अध्याय है जिसे केवल सैन्य दृष्टिकोण से समझना अपर्याप्त होगा। इसकी सबसे बड़ी शक्ति उसकी मनोवैज्ञानिक क्षमता थी। इसने भारतीय जनता में आत्मविश्वास, राष्ट्रवाद और राजनीतिक साहस को मजबूत किया तथा ब्रिटिश शासन की मानसिक वैधता को चुनौती दी।

INA ने यह प्रदर्शित किया कि भारतीय सैनिक ब्रिटिश साम्राज्य के स्थायी समर्थक नहीं हैं और उनकी निष्ठा राष्ट्र के प्रति भी हो सकती है। लाल किला मुकदमे और नौसेना विद्रोह ने इस मनोवैज्ञानिक परिवर्तन को और स्पष्ट किया।

यद्यपि INA सैन्य विजय प्राप्त नहीं कर सकी, किंतु उसने औपनिवेशिक शासन की उस मानसिक संरचना को कमजोर कर दिया जिस पर ब्रिटिश साम्राज्य आधारित था। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत की स्वतंत्रता केवल राजनीतिक वार्ताओं का परिणाम नहीं थी, बल्कि औपनिवेशिक मनोविज्ञान की पराजय भी थी।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज की विरासत आज भी भारतीय राष्ट्रवाद, आत्मसम्मान और सामूहिक चेतना की प्रेरक शक्ति बनी हुई है। उनका योगदान यह स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक अधिकार नहीं, बल्कि मानसिक मुक्ति की प्रक्रिया भी है।

संदर्भ सूची

Bayly, C. A., & Harper, T. (2007). *Forgotten armies: The fall of British Asia, 1941–1945*. Harvard University Press.

Bose, S. C. (1948). *The Indian struggle (1920–1942)*. Thacker, Spink and Co.

Brown, J. M. (1994). *Modern India: The origins of an Asian democracy*. Oxford University Press.

Chandra, B. (1989). *India's struggle for independence*. Penguin Books.

Gordon, L. (1990). *Brothers against the Raj: A biography of Indian nationalists Sarat and Subhas Chandra Bose*. Columbia University Press.

Haynes, J. (2011). *Subhas Chandra Bose in Nazi Germany: Politics, intelligence and propaganda 1941–1943*. Oxford University Press.

Majumdar, R. C. (1966). *History of the freedom movement in India* (Vol. 3). Firma KLM.

Sarkar, S. (2014). *Modern India: 1885–1947*. Macmillan.

Talwar, K. (2008). *The INA and India's freedom struggle*. National Book Trust.

Toye, H. (1959). *The springing tiger: A study of Subhas Chandra Bose*. Cassell.